MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विदेश वार्ता®

International Multilingual Refereed Research Journal

Issue-26, Vol-04 April to June-2018

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

26) सारांश : माणसाच्या शोधात निघालेली कविता
श्री. नामपल्ले शिवाजी हुल्लाजी, नांदेड ||106

27) जाहिरातींची भाषा
प्रा. एकनाथ शामराव पाटील, जि. कोल्हापूर ||107

28) सुखता हुआ तालाब में परिलक्षीत सामाजिक जीवन
प्रा. डॉ. कांबळे विलास नागोराव, जि. लातूर ||111

29) कालिदास एवं भवभूति की नाट्यकशतियों में नान्दी तथा भरत–वाक्य
बब्बू राम, चण्डीगढ़ ||113

30) गाथा नये भारत की
संतोष दयाल, जिला–चतरा (झारखण्ड) ||116

31) विक्रमोर्वशीय के भाव सौन्दर्य की मालतीमाधव के भाव सौन्दर्य से तुलनात्मक...
डॉ० अरविन्द कुमार बाजपेयी, कानपुर नगर ||120

32) भारतीय सेना में महिलाओं की यौद्धिक भूमिका : एक विश्लेषण
अनिल कुमार मीना & डॉ. आर.सी.एस. कुंवर, श्रीनगर गढ़वाल ||125

33) ग्रामीण बालिकाओं के मानवमिति परीक्षण द्वारा पोषण स्तर का अध्ययन
डॉ. प्रगति देसाई & कु. लालू डुडवे, इन्दौर ||133

34) रवीन्द्र कालिया की कहानियों में अभिव्यक्त : अल्पसंख्यक मुस्लिम विमर्श
लीलावती गोपिरेड्डी, वरंगल जिला, तेलंगाणा ||137

35) सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में माया वर्मा का योगदान
श्रीमती रूचिरा सिंह, ग्वालियर, म०प्र० ||141

36) असग़र वजाहत और राजन खान के कथा साहित्य में चित्रित समस्याओं का विश्लेषण
मोहम्मद आदिल इरशाद अहमद ||144

37) खण्डवा जिले में स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना का मूल्यांकन
डॉ. राजीव कुमार झालानी & डॉ. संजीव जटाले, इन्दौर ||147

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Mangla Kanungo (2008) Nutrition and Nutrition Status Reprint.

2. Dr. Aruna Palta (2202) Food & Nutrition. "Nutrition During Childhood" p. 276-277.

3. Dr. Aruna Palt (2003) Fundamental of Food & Nutrition, edition "Nutritional Status" p. 15-18.

4. Swaminathan (1968) The Nutrition and Feeding of Infents and Pre-school Children in the Developing Countries World Review of Nutrition & Dieted, vol. 985123.

5. HTTP://www.hcbi,htm.hih.gov/pmc articles/pmc 2486508/

6. HTTP://eh.wikipedia.org/wiki/malnu trtion in india.

7. Nair K.R.G. (2007) malnurishment among children in India A Regional Analysis Economic and Political Weekly September 15, pp 3797-3803.

8. UNICEF (2007) children and the millennium development goal : Progress to world fit for children's fund Newyark.

9. Food and Nutrition Board Pro-gress in metting protein needs of Infants and Pre-school children publ. 843 Washington D.C. National Academy of Sciences Nationai Research Council 1961.

10. Food and Nutrition Board, 6 Pre-school child mal-Nutition Primary Deterreent to Human Progress bubl. 1282 Washington D.C. Sciences National Research Council 1964.

❑❑❑

34

रवीन्द्र कालिया की कहानियों में अभिव्यक्त : अल्पसंख्यक मुस्लिम विमर्श

लीलावती गोपिरेड्डी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
काकतीय शासकीय महाविद्यालय वरंगल जिला, तेलंगाणा

****

'विमर्श' पारिभाषिक शब्द का अंग्रेजी के 'डिस्कोर्स' (Discourse) के समानार्थी रूप में हिन्दी में प्रचलित शब्द है। हिन्दी समकालीन आलोचना में विमर्श शब्द उत्तर-आधुनिक काल के संदर्भ में प्रयुक्त किये जा रहे हैं। 'हरदेव वाहरी' के 'अंग्रेजी-हिन्दी कोश' में 'डिस्कोर्स' के लिए हिन्दी समानार्थी शब्द दिए है - ''भाषण, बातचीत, धर्म पर प्रवचन देना।''(1) 'क्रिसवार्कर' ने विमर्श को इस तरह परिभाषित किया है - ''विमर्श ज्ञान की वस्तुओं का बोधगम्य तरीके से परिकल्पना करते हैं, संरचना करते हैं, निर्माण करते हैं, साथ ही तर्क के अन्य तरीकों को बोधगम्य बनाते हैं।''(2)

अब प्रश्न उठते हैं कि - 'अल्पसंख्यक' हैं कौन ? किन्हें कहते हैं ? आदि। 'अल्पसंख्यक' पारिभाषिक शब्द अंग्रेजी के 'माइनॉरिटि' (Minority) शब्द का प्रचलन है। 'हरदेव वाहरी' ने 'माइनॉरिटि' को इस प्रकार परिभाषित किया है - ''अल्पसंख्यक समूह बहुसंख्यकों के अत्याचारों से पीड़ित होता है।''(3) भारतीय संविधान में अल्पसंख्यक संबंधी दो प्रावधान निर्दिष्ट किये गए हैं पहला 'भाषाई' तथा दूसरा 'धार्मिक' हैं। भाषाई स्तर पर अनेक जन-समुदाय अल्पसंख्यक हैं जैसे कि - ''संथाली, कश्मीरी, सिंधी, डोगरी, बोडो, मैथिली, आदिवासी आदि।''(4) धार्मिक स्तर पर देखा जाय तो - मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन तथा पारसी, धर्मों को मानने वालों को समाहित किया गया हैं। ''प्रधानमंत्री पंडित नेहरु ने साफ़ किया कि पंथ / आस्था / मज़हब / धर्म आधारित आरक्षण गलत हैं। तब तक अल्पसंख्यक का मतलब मुसलमान हो चुका था।''(5) जिसे हम राजनीतिक जाल कह सकते है। भारत सरकार ने 17-05-1992 को 'राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग' (National Commission for Minorities) का कानून पारित

Scanned with CamScanner

करवाया । इसके मुताबिक - ''अल्पसंख्यक वह समुदाय है, जो केंद्रीय सरकार अधिसूचित करें अर्थात् अल्पसंख्यक घोषित करने का अधिकार सरकार ने खुद अपने हाथ में लेलिया । किसी जाति समूह को अनुसूचित जाति या जनजाति घोषित करने की विधि (अनु. 341 व 342) बड़ी जटिल है । यह काम संसद ही कर सकती है लेकिन अल्पसंख्यक घोषित करने का काम सरकारी दफ्तर से ही होने का प्रावधान है ।''(6) साथ ही संविधान के अनुच्छेद 29 का शीर्षक में है - ''अल्पसंख्यक वगहरे के हितों का संरक्षण, यहाँ कहा गया है कि भारत के किसी भाग के निवासी नागरिकों के किसी अनुभव को जिसकी अपनी विशेष भाषा लिपी या संस्कृति है ।''(7) उपर्युक्त कथनों का सार है कि - किसी पंथ / धर्म / आस्था / मज़हब को मानने वाले भारत के निवासी, जिनकी संख्या में कम होंगे । अलग अपनी भाषा-लिपी, संस्कृति-संप्रदाय होगी तथा बहुसंख्यकों के अत्याचारों से पीडित जन समुदाय होगें । अल्पसंख्यक घोषित करने का कार्य केवल भारत सरकार ही करती है जिन्हें हम 'अल्पसंख्यक' कह सकते हैं । एक जमाने में बौद्ध, जैन और सिख, जो कभी बहुसंख्यक हिन्दु वर्ग का हिस्सा हुआ करते थे, अभी उनसे अलग हो चुके हैं । अब उन्हें अल्पसंख्यक वर्ग का दर्जा दिया जा रहा है ।

हिन्दी साहित्यिक विकास यात्रा को देखें तो पहले साहित्यकारों ने राजाओं का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किए बाद में स्वांता सुखाय रचनाएँ कीं । फिर नख-शिख वर्णन करते रहें । आधुनिक काल में स्वच्छंदवादी से सामंतवादी होते-होते यथार्थवादी से गुजरते-गुजरते स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, मुस्लिम विमर्श तक साहित्य को पहुँचा दिया गया ।

समकालीन साहित्यक लेखन का झुकाव जन-समुदाय पर भी केंद्रित हुआ है । जिसमें सामाजिक-सांस्कृतिक प्रश्नों पर अधिक बल दिया जाता है । हिन्दी साहित्य के आदिकाल से ही अल्पसंख्यक वर्ग के साहित्य क प्रस्थान बिंदु देखने को मिलता है चाहे वह बौद्ध साहित्य हो, जैन साहित्य हो या सिख साहित्य या मुस्लिम साहित्य ।

अब हम मुस्लिम विमर्श को जानने का प्रयास करेंगे ।

मुस्लिम विमर्श :-

'टी.वी.कट्टीमनी' के शब्दों में मुस्लिम विमर्श इस प्रकार है - ''मुस्लिम विमर्श वास्तव में - मुसलमानों को जानने, समझने, परिभाषित करने की प्रक्रिया का नाम है । मुसलमान हैं कौन ? किस देश-प्रदेश के हैं वे ? उनकी भाषा-बोली क्या है ? उनका धर्म-मज़हब देश के साथ क्या ताल्लुक रखता है ? मुसलमानों की तहज़ीब क्या होती है ? उनके आहार-विहार, आचार-विचार, तीज-त्यौहार क्या होते है । साथ ही मुस्लिम समाज की अपनी निजी चिंतनधारा है । क्यों कि उनका अपना एक निजी मजहब है, अपने निजी उसूल हैं । इनकी अपनी संस्कृति है, जुबान है, वेश-भूषा है, खानपान है, मुस्लिम दवा-दारु है, अपने गृह उद्योग हैं, अपनी उत्पाद और वितरण व्यवस्था भी है । अपना इतिहास वास्तुकला, स्थापत्यकला, नृत्य, संगीत है । इन सबों का मिला-जुला रूप को ही मुस्लिम विमर्श कहा जाता है ।''(8) इन सभी की अभिव्यक्ति हिन्दी लेखकों ने अपनी रचनाओं में की है जैसे कि प्रेमचंद, यशपाल, उपन्द्रेनाथ अश्क, भीष्मसाहनी, कमलेश्वर, मोहन राकेश, रवीन्द्र कालिया आदि, जो गैर मुस्लिम हैं ।

रवीन्द्र कालिया की कहानियों में अभिव्यक्त अल्पसंख्यक :मुस्लिम विमर्श :-

भारत के मुस्लिम वर्ग कई चुनौतियों एवं संघर्षों का सामना किया हैं । जिनमें से कुछ निम्नांकित चुनौतियों और समस्याओं की अभिव्यक्ति रवीन्द्र कालिया की कहानियों में [illegible] 1) असुरक्षा की भावना तथा राष्ट्रीयता पर संदेह; 2) सामाजिक संरचना में जाति-धर्म गत भेदभाव एवं वहम; 3) मुस्लिम स्त्री की स्थिति तथा 4) आर्थिक तथा शैक्षिक बदहाली का चित्रण ।

1) असुरक्षा की भावना तथा राष्ट्रीयता पर संदेह :-

देश विभाजन के समय तथा उसके पश्चात् की ग्रासदी, सांप्रदायिक दंगों से मुसलमानों में असुरक्षा की भावना उत्पन्न हुई थी । रवीन्द्र कालिया ने अपनी कहानी 'पनाह' के माध्यम से भारत-पाकिस्तान के विभाजन के समय कट्टर पंत्तियों के दहशत में मुसलमान व्यक्ति का तिलमिलाहट को दर्शाया है - ''मुझे देख कर घबडाइए नहीं घड़ी दो घड़ी के लिए पनाह माँग रहा हूँ, दे दीजिए । मैं जिंदगी भर आपका एहसान न भूलूँगा ।''(9) पनाह देने वाले की शक्किनज़र को पहचानते हुए कहता है - ''मैं कोई चोर उचक्का या लुटेरा नहीं हूँ । आप ही की तरह इस मुल्क का बाशिंदा हूँ ।''(10) शहर में दंगे-फ़साद के कारण उसके बेटे को पुलिस गिरफ्तार करके ले जाने का कारण सुनाता है - ''दरअसल उसे मालूम तक नहीं था कि शहर में दंगे हो गए है । वह इत्मीनान से घर के बाहर नाली में पेशाब कर रहा था कि उसे कुछ लोग भागते हुए नज़र आए । वह भी नाड़ा बांधते हुए भागा । उससे यही गलती हो गई । उसे पी.ए.सी. देखकर भागना नहीं चाहिए था । उसे चाहिए था वहीं नाली पर चुपचाप बैठा रहता ।''(11) इन

Scanned with CamScanner

हालातों में पड़ोसियों से, उनके बेटे को ज़मानत लेने के लिए मिन्नत करता तथा नाकाम भी होता है क्यों कि हर एक व्यक्ति उन पर यकीन नहीं करता। दंगों के कारण खर्फ़ू लगाकर दो घंटे के लिए खर्फ़ू हटा दिया जाता है तो वह बाहर निकलता है तो आवाज़े सुनाई देती है - ''लड़ो! लड़ो किससे लड़े भाई ? मारो! मारो!! किसको मारो! फैसाओं! किसे फैसाओं ?''(12) मुसलमान को यहाँ रहते हुए भी यहाँ के नहीं मानते है उसे बार-बार यह साबित करना पड़ता है कि वह इसी मिट्टी का है। वह अपनी मातृभूमि के प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए तनावपूर्ण वातावरण से ऊबकर सवाल करता है - ''क्या वे चाहते है कि मैं अपने बच्चों को भूखा मार दूँ या अपने बड़े भाई की तरह पाकिस्तान चला जाऊँ ? वे शायद यही चाहते हैं। अगर यही चाहते हैं तो सामने क्यों नहीं आते, छिपछिप कर, पीछा क्यों करते हैं ? मगर यह तय है कि मैं पाकिस्तान नहीं जाऊँगा। मुझे अपने वतन से बेपनाह मुहब्बत है, और फिर हिन्दुस्तान में ही दम तोडूँगा।''(13) अंत में वह हताश होकर विनती करते हुए यह सुनाता है - ''मैं जमाने से बुरा हूँ तो बुरा रहने दो। यानि जिस हाल में हूँ, मुझको रहने दो। तुम तो अब अपनी नज़र से न गिराओ अल्लाह ! सबकी नज़र से गिरा हूँ, गिरा रहने दो।''(14) रवीन्द्र कालिया ने इस प्रकार भारत - पाकिस्तान के विभाजन के समय में भारतीय मुसलमानों की मानसिक स्थिति को चित्रित किया है साथ ही असुरक्षा की भावना तथा उनकी राष्ट्रीयता पर संदेह को 'पनाह' कहानी के माध्यम से उजागर किया है।

2) सामाजिक संरचना में जाति-धर्म गत भेदभाव एवं बहस :-

भारतीय मुसलमानों ने आधुनिक काल में दो बड़े आघातों का सामना किया है। एक देश विभाजन दूसरा बाबरी मसज़िद ढह जाने (6 दिसंबर 1992) की घटना। देश विभाजन, अंग्रेज़ो की कुटिल राजनीति से हिन्दु-मुसलमानों में बढ़ती गयी दूरी तथा समाज के पिछड़ेपन के कारण दोनों धर्मों में धार्मिक कट्टरता उत्पन्न हुई थी। परिणामतः धर्म गत भेदभाव की भावनाएँ जन्म ली। 'रवीन्द्र कालिया' की 'ज़रा सी रोशनी' कहानी में कॉलोनी में मंदिर निर्माण करने के लिए बहस चलती है। वह बस इस प्रकार है - पांडेय जी कहते है - ''बगल में ही दो-तीन मुस्लिम परिवार हैं, मंदिर के लिए इससे बहतर जगह कौन सी हो सकती है।''(15) तो सिंह जी भड़क कर प्रश्न करते हैं - ''तुम सब लोग सांप्रदायिक हो, मंदिर सिर्फ़ इसलिए बनाना चाहते हो, क्यों कि कॉलोनी में एक मस्जिद है।''(16) पहले तो श्रीवास्तव ने कॉलोनी मे मंदिर निर्माण के लिए अपना प्लाट देने के लिए मना करता है। फिर अपने बचाव के लिए वह बोलता है - ''तुम्हारे जैसे लोगों के कारण ही आज देश में हिन्दुओं की यह दशा हो गई है।''(17) इससे क्रोधित होकर सिंह भड़क उठते हुए सवाल करते है - ''क्या दशा हो गइ है ? तुम लोग हर क्षेत्र में आगे हो, गुलछर्रे उड़ा रहे हो। तुम लोगों ने बड़े-बड़े तमाम पद हथिया रखे हैं।''(18) 'रवीन्द्र कालिया' ने 'ज़रा सी रोशनी' कहानी के माध्यम से बहुसंख्यक तथा अल्पसंख्यकों की मानसिकता को स्वाभाविक ढंग से चित्रण किया है, जो सांप्रदायिकता को बढ़ाने में अहम् भूमिका निभाती है। देखा जाय तो यह मात्र एक बहस है। किंतु कभी-कभी, छोटी-छोटी बहस ही बड़े संग्राम में तबदील होने में देरी नहीं लगती।

3) मुस्लिम स्त्री की स्थिति :-

मुस्लिम स्त्री की स्थिति अन्य भारतीय स्त्रियों से अधिक नाज़ुक और दयनीय हैं क्यों कि मुस्लिम वर्ग में पुरुष की बहुभार्यत्व को स्वीकारा है। इसमें कोई बंधिश नहीं है। हालाँकि आजकल इस विषय में कुछ बदलाव किया गये हैं।

रवीन्द्र कालिया ने 'नया कुर्ता' कहानी में इसका अंकन किया है। ''आबिद बहुत बरसा पहले, जब साहिल चार बरस का था, साहिल और उसकी अम्मा को छोड़ कर लापता हो गया था। लोगों का विचार था कि आबिद ने लखनऊ में एक और औरत रख ली और वहाँ अपने सात बच्चों के साथ सुख चैन से ज़िन्दगी बसर कर रहा है।''(19) इसी प्रकार इसी कहानी में ज़ैदी साहब की बीवी का हाल है। ''जानकार लोगों का कहना था कि ज़ैदी साहब का एक परिवार अलीगढ़ में भी है। यही वजह था। ईद या मुहर्रम पर ही मुहल्ले में नज़र आते थे और हफ्ता-दस दिन तक रुक कर अलीगढ़ लौट जाते थे।''(20) रवीन्द्र कालिया ने मुस्लिम नारी-जीवन की त्रासदी को, परित्यक्ता नारी का अकेलापन तथा विवशता का मार्मिक चित्रण 'नयाकुर्ता' कहानी में किया है।

इसके विपरीत सशक्त मुस्लिम नारियों को भी कहानियों के पात्रों के रूप में सजीव वर्णन किए है। जैसे कि - ''नसरीन आपा निःसंतान थी। अब वह दुनिया में अकेली थी। उसकी गेटी आसानी से निकल रही थी।''(21) नसरीन आपा अकेली होते हुए भी स्वावलंबन से उनकी ''कोयले की दुकान थी। नसरीन आपा ढिबरी जलाये रात देर तक दुकान खोलती। दुकान क्या थी, गली की तरफ खुलने वाली एक कोठरी थी।''(22) नसरीन की तरह ही एक और पात्र है, 'साहिल की अम्मा'। वह परित्यक्ता नारी होते हुए भी पति आबिद के बिना जीवन निर्वाह करने का सामर्थ्य रखती है। ''साहिल की अम्मा खुदा से डरने वाली औरत थी। वह

दिन-भर बीड़ी बनाती और अपने प्यारे साहिल को पालती । ... दरअसल वह साहिल को पढ़ा-लिखा कर आबिद को दिखा देना चाहती थी कि वह कोई मामूली औरत नहीं ।"(23) इस प्रकार रवीन्द्र कालिया की 'नया कुर्ता' कहानी के द्वारा मध्यवर्गीय मुस्लिम नारियों की असहाय व दयनीय स्थिति को दर्शाया है साथ ही साथ अकेलापन को पार करके सशक्त बनी स्त्रियों का अंकन भी किया है, जो सराहनीय है ।

4) आर्थिक तथा शैक्षिक बदहाली का चित्रण ।

आर्थिक विपन्नता तथा शिक्षा के अभाव में भारतीय मध्यवर्गीय मुस्लिम ज्यादातर बदहाल में ही जिंदगी गुजारते नजर आते हैं । रवीन्द्र कालिया अपनी कहानियों में इस स्थिति का सजीव अंकन किया है । 'नया कुर्ता' कहानी के 'साहिल' आठ साल का था, उसे बीड़ी पीते देख कर मास्टर, उसे बेंत से पीटते है तो साहिल की अम्मा कहती - "इसे और पीटिये ! घर लौट कर साहिल की अम्मा घंटों रोती रही और माँ और बेटा, दोनों भूखे पेट सो गये । माँ ने बीड़ी नहीं बनायी, इसका मतलब था, अगले रोज भी वह भूखी रहेगी ।"(24) कुछ सालों के बाद साहिल इस्त्री का धंधा शुरु करता है तथा कोयले का उधार चुका नहीं पाता तो नसरीन आपा उसे धमकाती है "साहिल के बच्चे, तूने पहले के पैसे अभी तक नहीं लौटाये और अब और उधार माँगने चला आया ? ... तूने शाम तक मेरे पैसे न लौटाये तो तेरा लोहा उठा लाऊँगी । दिन भर जो आवारा लड़कों के साथ हूं-हूं मचाये रखता है, इससे भूखने वाले तेरा टीन-टप्पर उठा फेंकेंगे ।"(25) अतः हम कह सकते है कि - आर्थिक विपन्नता, कुसंगत में पड़कर तथा शैक्षिक बदहाली के कारण युवा पीढ़ी भविष्य निर्माण करने में विफल होते दिखाई दे रहे हैं । रवीन्द्र कालिया केवल समस्याओं को इंगित किया है । किन्तु समाधान तो हमें ही निकालनी पड़ेगी, जो समझ और शिक्षा के द्वारा ही संभव है ।

निष्कर्षतः कह सकते है कि - रवीन्द्र कालिया अपनी कहानियों में भारतीय सामाजिक संरचना के भेदभाव को मुस्लिम समाज के परिप्रेक्ष्य में चित्रण किया है । उनको पात्रों के माध्यम मुसलमानों की मनोदशा, असुरक्षा की भावना, उनकी राष्ट्रीयता पर संदेह और प्रश्नचिह्न भी लगाया है । रवीन्द्र कालिया के कहानियों की विशिष्टता है कि वे बिना पक्षपात के सामाजिक वास्तविकता को पकड़ने का प्रयत्न किया है । वे भारत के गंगा-जमुना तहजीब को या सामासिक संस्कृति (Composite Culture) के पक्षधरता को व्यक्त की है । मुस्लिम नारी के उत्पीड़न को संवेदनात्मक स्तर पर सूक्ष्मता से व्यक्त करते हुए निडर, स्वावलंबी मुस्लिम नारियों का भी चित्रण किया है । मुस्लिम युवा वर्ग के माध्यम से शैक्षिक बदहाली तथा आर्थिक विपन्नता के कारण उत्पन्न समस्याओं को उजागर किया है ।

संदर्भ :-

1) हरदेव बाहरी - अंग्रेजी-हिन्दी शब्द कोश - पृ.सं.- 218

2) वाक् (नये विमर्शों का त्रैमासिक, 2007 अंक-3) cakh|g - cak ca 229

3) हरदेव बाहरी - अंग्रेजी-हिन्दी शब्द कोश - पृ.सं.- 547

4) www.gfbv.it.minority.languages in India.

5) https//hi: wikipedia.org/wiki/[illegible] अल्पसंख्यक अधिकार -06 Oct.18

6) - वही -

7) - वही -

8) https//sirajsamay.blogspot.com.

9) रवीन्द्र कालिया - रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ - पृ.सं.- 3

10) - वही -

11) रवीन्द्र कालिया - रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ - पृ.सं.- 4

12) - वही -

13) रवीन्द्र कालिया - रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ - पृ.सं.- 5, 6

14) रवीन्द्र कालिया - रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ - पृ.सं.- 7

15) रवीन्द्र कालिया - ज़रा सी रोशनी (क.सं)- पृ.सं.- 79

16) रवीन्द्र कालिया - ज़रा सी रोशनी (क.सं)- पृ.सं.- 80

17) - वही -

18) - वही -

19) रवीन्द्र कालिया - नया कुर्ता (क.सं) - पृ.सं.- 17

20) रवीन्द्र कालिया - नया कुर्ता (क.सं) - पृ.सं.- 24

21) रवीन्द्र कालिया - नया कुर्ता (क.सं) - पृ.सं.- 20

22) रवीन्द्र कालिया - नया कुर्ता (क.सं) - पृ.सं.- 19

23) रवीन्द्र कालिया - नया कुर्ता (क.सं) - पृ.सं.- 17, 18

24) - वही -

25) रवीन्द्र कालिया - नया कुर्ता (क.सं) - पृ.सं.- 22